

\Hindi

Prapatti Darshana Sutrani

—
—
प्रपत्तिदर्शनसूत्राणि
—
—

Document Information



Text title : Prapatti Darshanam Sutrani

File name : prapattidarshanasUtrANi.itx

Category : raama, rAmAnanda, prapatti

Location : doc_raama

Author : rAmaharShaNadAsajI

Proofread by : Mrityunjay Rajkumar Pandey

Latest update : June 20, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 20, 2024

sanskritdocuments.org



Prapatti Darshana Sutrani

प्रपत्तिदर्शनसूत्राणि



सूत्रः- अथातो प्रपत्ति व्याख्यास्याम् ॥ १ ॥

सूत्रार्थ- अब प्रभुप्रपत्ति के रडस्यार्थ को कडा जा रडा है ।

सूत्रः- अज्ञः प्रज्ञयोः मूलेच्छा ऐकैव भवति ॥ २ ॥

सूत्रार्थ- अज्ञानी और ज्ञानी के लृद्य की मूल कामना ऐक ही होती है ।

सूत्रः- सा सुप्तेच्छा ॥ ३ ॥

सूत्रार्थ- वड है सुप की छ्छा ।

सूत्रः- आनन्दंशेन जातः ॥ ४ ॥

सूत्रार्थ- आनन्दमय परब्रह्म का अंश होने से अर्थात् आनन्दमय से प्रकट होने के कारण ।

सूत्रः- स किं त्रितापेन तपति ॥ ५ ॥

सूत्रार्थ- वड (जुव)क्यों त्रिताप से तपता रडता है?

सूत्रः- तस्यान्वेषणं मृग मरीचिकावत् ॥ ६ ॥

सूत्रार्थ- जुवों के सुप पाने का प्रयास मृग-मरीचिकावत् भ्रम स्वरुप है ।

सूत्रः- वेदार्थ मननीयम् ॥ ७ ॥

सूत्रार्थ- वेदार्थ का अनुसन्धान करके तदाकार हो जाना चाडिऐ ।

सूत्रः- वेदार्थ केन विजानीयात् ॥ ८ ॥

सूत्रार्थ- वेदार्थ किसके द्वारा जाना जाय?

सूत्रः- एतिहास पुराणाभ्याम् ॥ ९ ॥

सूत्रार्थ- एतिहास और पुराण वेदोपवृण्डण हैं अतः वेद का अर्थ एन्हीं से निश्चय करना चाडिऐ ।

सूत्रः- उभयोर्मध्ये एतिहासः प्रबलः ॥ १० ॥

सूत्रार्थ- दोनों में एतिहास श्रेष्ठ ठडरता है ।

सूत्रः- रामायणं मडाभारतौ येतिहासद्वयम् ॥ ११ ॥

सूत्रार्थ-रामायण और मडाभारत दो एतिहास हैं ।

सूत्रः- उभयोरनयोः रामायणैव श्रेष्ठः ॥ १२ ॥

सूत्रार्थ- एन दोनों में श्रीमद् रामायण श्रेष्ठतर है ।

सूत्रः- रामायणोक्तं सीतायाः पुरुषकार वैभवं प्रसिद्धं अतो पुरुषकार समये के डे गुणाः श्रीमपेक्षिताः ॥ १३ ॥
सूत्रार्थ- श्रीवाल्मीकि रामायण में कडा दुआ श्रीसीताजु का पुरुषकार वैभव प्रसिद्ध है अतः जिज्ञासा छोती है कि पुरुषकार करने वाली श्रीसीताजु में कौन-कौन गुण अपेक्षित होकर रहते हैं, जिसके कारण श्रीसीताजु की कडी दुई, कल्याण वार्ता को श्रवणकर, श्रीरामजु ज़ुव-कल्याण में तत्पर हो जाते हैं ।

सूत्रः- कृपा पारतन्त्र्य अनन्यार्हत्वयापेक्षित गुणाः ॥ १४ ॥

सूत्रार्थ- पुरुषकार कार्य के लिये कर्ता में कृपा-पारतन्त्र्य और अनन्यार्हत्व गुण अपेक्षित हैं ।

सूत्रः- अपि च शमदमाद्यः ॥ १५ ॥

सूत्रार्थ- पुरुषकार कर्ता में शमदमादि गुणों का भी दर्शन होना आवश्यक है ।

सूत्रः- काय सम्पत्तिरपि समुद्रवत् ॥ १६ ॥

सूत्रार्थ- श्रीसीता ज़ु में देह-वैभव के सिन्धु का सदा ओक रस दर्शन होता रहता है ।

सूत्रः- उपदेशेन उभयोर्वशीकर्तुं समर्था ॥ १७ ॥

सूत्रार्थ- श्रीजानकी ज़ु उपदेश के द्वारा एश्वर और ज़ुव एन दोनों को वश में करने के लिये समर्थ हैं ।

सूत्रः- एश्वरं (रामं)स्वदेह-वैभवेन, ज़ुवं कृपयाय ॥ १८ ॥

सूत्रार्थ- एश्वर श्रीराम को स्वसौन्दर्य से और ज़ुव को अडैतुकी कृपा से वश में करती है ।

सूत्रः- उभयोस्वर्वात्तन्त्र्यं नश्यति ॥ १९ ॥

सूत्रार्थ- वश में करने से एश-ज़ुव का स्वातन्त्र्य नष्ट हो जाता है ।

सूत्रः- आचार्य मुष्णेन सीतायाः कार्यमेव ज्ञापितम् ॥ २० ॥

सूत्रार्थ- आचार्य मुष्ण से श्रीसीता ज़ु का पुरुषकार कार्य ही जाना जाता है ।

सूत्रः- एश्वरोपि पुरुषकारापेक्षितः ॥ २१ ॥

सूत्रार्थ- एश्वर भी पुरुषकार अपेक्षित है ।

सूत्रः- रामे पुरुषकारत्वं श्रियां रक्षकत्वं न दृश्यते ॥ २२ ॥

सूत्रार्थ- श्रीराम ज़ु में पुरुषकारत्व और श्रीसीता ज़ु में रक्षकत्व का दर्शन नहीं होता ।

सूत्रः- पारतन्त्र्यं विनश्यति ॥ २३ ॥

सूत्रार्थ- श्रीसीता ज़ु यदि रक्षक बन जाये तो उनका प्रभु-पारतन्त्र्य नष्ट हो जायगा ।

सूत्रः- अकिञ्चनत्व, आर्तित्व, अगतित्व, त्रयदशामाश्रित्य एश्वर सन्निधौ तवास्मीति च याचनं अधिकारी कृत्यम् ॥ २४ ॥

सूत्रार्थ- अकिञ्चनत्व, आर्तित्व और अगतित्व के साथ, मैं आपका हूँ कडना प्रभु से, अधिकारी कृत्य है ।

सूत्र- प्रभु-प्रवृत्ति-निवृत्ति-स्वप्रवृत्ति-निवृत्तिः प्रपत्तिः ॥ २५ ॥

सूत्रार्थ- श्रीराम ञु की प्रवृत्ति का निरादर करने का अर्थात् न मानने का जो ञुव का स्वभाव बन गया है, उसकी निवृत्ति ढो जाना ढी प्रपत्ति है ।

सूत्र- प्रकर्षेणपत्तिः प्रपत्तिः ॥ २६ ॥

सूत्रार्थ- प्रकर्षतया प्रणम्य को प्रणाम करना प्रपत्ति है ।

सूत्र- प्रति-पत्तिः प्रपत्तिः ॥ २७ ॥

प्रति सम्बन्धी (शारण्य)को सर्वसमर्पण पूर्वक प्रणाम करना प्रपत्ति कडलाती है ।

सूत्र- प्रपतति प्रपत्तिः ॥ २८ ॥

सूत्रार्थ- अशु, शरीर और अडममादि का प्रभु-चरणों में गिर जाना प्रपत्ति है ।

सूत्र- प्रपत्तिं न्यासोऽपि कथ्यते ॥ २९ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति विधा को न्यास विधा भी कडते हैं ।

सूत्र- गृह-रक्षकौ शरणमुच्यते ॥ ३० ॥

सूत्रार्थ- गृह और रक्षक को शरण कडते हैं ।

सूत्र- त्रिकरणेन त्रयः ॥ ३१ ॥

सूत्रार्थ- मनसा-वचसा और कर्मणा त्रेड से प्रपत्ति तीन प्रकार की ढोती है ।

सूत्र- षडः विधा शरणागतिः ॥ ३२ ॥

सूत्रार्थ- शरणागति षः प्रकार की ढोती है ।

सूत्र- अनुकूलस्य सङ्कल्पः ॥ ३३ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति का प्रथम अङ्ग प्रभु के अनुकूल रहने का सङ्कल्प है ।

सूत्र- प्रतिङ्कलस्य वर्जनम् ॥ ३४ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति का दूसरा अङ्ग है प्रभु-प्रतिङ्कलता का त्याग ।

सूत्र- रक्षिष्यतीति विश्वासः ॥ ३५ ॥

सूत्रार्थ- प्रभु ढमारी रक्षा अवश्य करेङ्गे, ढैसा मडविश्वास प्रपत्ता के ढृदय में ढोना ढाडिये ।

सूत्र- गोभृत्व वरणं तथा ॥ ३६ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति करने वाले को शारण्य से, अपनी रक्षा करने के लिये प्रार्थना करनी ढाडिये ।

सूत्र- आत्म-निक्षेपम् ॥ ३७ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत येतन को शारण्य के चरणों में आत्मसमर्पण कर देना ढी शरणागति है ।

सूत्रः- कार्पण्यम् ॥ ३८ ॥

सूत्रार्थ- शरणागति काल में शारण्य के सम्मुख अपनी कार्पण्यता निवेदन करनी चाहिये ।

सूत्रः- देश नियमोनास्ति ॥ ३९ ॥

सूत्रार्थ- शरणागति के लिये कोई देश-विशेष का नियम नहीं है ।

सूत्रः- प्रपत्तेः कालस्यापि ॥ ४० ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति करने के लिये कोई काल विशेष का भी नियम नहीं है ।

सूत्रः- नैव नियमोऽधिकारिणः ॥ ४१ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति करने वाले अधिकारी के लिये भी कोई नियम नहीं है ।

सूत्रः- अज्ञ-प्रज्ञ भक्ताश्च ॥ ४२ ॥

सूत्रार्थ- अज्ञानी-विज्ञानी एवं भक्ति प्रिय भक्तादि, सभी भगवत् प्रपत्ति कर सकते हैं ।

सूत्रः- न शुद्धिरपेक्षिता ॥ ४३ ॥

सूत्रार्थ- शुद्धयाशुद्धि का भी कोई नियम नहीं है, प्रपत्ति समय में ।

सूत्रः- कृल नियमोऽपि नास्ति ॥ ४४ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति करने के कृल का भी कोई नियम नहीं है ।

सूत्रः- प्रपत्ति-धर्मैव प्रपत्तेर्नियमः ॥ ४५ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति धर्म के अनुसार स्थिति अपनाना ही प्रपत्ति का नियम है ।

सूत्रः- न कोऽपि प्रायश्चित्तो प्रपत्तेः ॥ ४६ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति भ्रष्ट होने पर उसका कोई प्रायश्चित्त नहीं है ।

सूत्रः- स्वयमेव प्रपत्तिरस्ति ॥ ४७ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति-पथ के पथिक को पथ-भ्रष्ट हो जाने पर पुनः प्रपत्ति-पथ को अपना लेना उसका प्रायश्चित्त है ।

सूत्रः- ममेति आढ्यनुरक्तिरशुद्धिः ॥ ४८ ॥

सूत्रार्थ- अहं और मैं तथा इनके कार्यों में अनुरक्ति होना प्रपत्ति की अशुद्धि है ।

सूत्रः- उपायेनापि स्वीकारा प्रपत्तिः अशुद्धाभवति ॥ ४९ ॥

सूत्रार्थ- उपायतया स्वीकार करने से भी सिद्ध-साधन प्रपत्ति में अशुद्धि आ जाती है ।

सूत्रः- प्रपत्तिः अधिकारं कथयति ॥ ५० ॥

सूत्रार्थ- शरणागति यद्यत् भतलाती है कि, हे शारण्य ! यद्यत् शरणागत रक्षा पाने का अधिकारी है ।

सूत्रः- प्रपत्तिः स्वयं प्रकाशयति ॥ ५१ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति येतन के स्वरूप को प्रकाश में लाती है ।

सूत्र- अयमात्मा ब्रह्मदासः श्रुतिर्वदति ॥ ५२ ॥

सूत्रार्थ- यह ज्ञात्मा परमोत्मा का दास है, और श्रुति का सिद्धान्त है ।

सूत्र- रक्षकत्वेननावलम्बनीयानि साधनान्तराणि ॥ ५३ ॥

सूत्रार्थ- साधनान्तरों को रक्षक मानकर अवलम्बन नहीं लेना चाखिये शरणागत को ।

सूत्र- सर्वधर्ममयी प्रपत्तिः ॥ ५४ ॥

सूत्रार्थ- शरणागति सर्व धर्ममय है ।

सूत्र- द्वयमन्त्रोव्यारण कर्मणा युक्तम् ॥ ५५ ॥

सूत्रार्थ- द्वयमन्त्र के उव्यारण रूप कर्म योग से युक्त है, प्रपत्ति ।

सूत्र- अर्थ पञ्चक ज्ञानैनापियुक्तम् ॥ ५६ ॥

सूत्रार्थ- अर्थ पञ्चक ज्ञान से प्रपत्ति सर्वथा युक्त है ।

सूत्र- भक्तिरपि दृश्यते ॥ ५७ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति में भक्ति का भी पूर्ण दर्शन होता है ।

सूत्र- योगः पदे पदे ॥ ५८ ॥

सूत्रार्थ- अष्टाङ्ग योग तो प्रपत्ति परक मन्त्र में पद-पद में दिखाई देता है ।

सूत्र- न सङ्गते साधनान्तराणि ॥ ५९ ॥

सूत्रार्थ- शरणागति अन्य उपायों को नहीं सङ्गती, उपाय रूप में ।

सूत्र- सर्वलोक शारण्योपि भविष्य कालं न सङ्गते ॥ ६० ॥

सूत्रार्थ- सर्वलोक शारण्य, शरणागत को कल देने के समय भविष्य काल को नहीं सङ्गते ।

सूत्र- प्रपत्तिर्ग्राह्या मुमुक्षुभिः ॥ ६१ ॥

सूत्रार्थ- सिद्ध साधन शरणागति मुमुक्षु के द्वारा ग्राह्य है ।

सूत्र- सङ्गदेव, भगवद् वाक्यम् ॥ ६२ ॥

सूत्रार्थ- भगवद्वाक्य के अनुसार एक बार की कुठ शरणागति ही कल प्रदान करने में पर्याप्त है ।

सूत्र- षष्ठप्रीतेर्वशात् पुनर्पुनः ॥ ६३ ॥

सूत्रार्थ- अपने आराध्य की प्रीति के वश में छोकर बार-बार शरणागति की जा सकती है ।

सूत्र- अन्तराय डानि डेतुत्वाडपि ॥ ६४ ॥

सूत्रार्थ- शारीरिक और मानसिक विघ्न उपस्थित न डो षसलिये भी बारबार प्रपत्ति की जा सकती है ।

सूत्रः- कालक्षेपाय ॥ ६५ ॥

सूत्रार्थ- कालक्षेप के लिये भी शरणागति मन्त्र बार-बार उच्चारण किया जा सकता है ।

सूत्रः- नासमर्थात् सा स्वऋपत्वात् ॥ ६६ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति स्वऋपानुकूल होने से ऋणणीय है न कि साधनों की असमर्थता से ।

सूत्रः- असमर्पितस्य कुतः प्रेमसुषुम् ॥ ६७ ॥

सूत्रार्थ- प्रेमास्पद को सर्व समर्पण किये बिना प्रेम सुषु अति दुर्लभ है ।

सूत्रः- मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना ॥ ६८ ॥

सूत्रार्थ- प्रत्येक व्यक्तियों की बुद्धि भिन्न-भिन्न होती है ।

सूत्रः- भडवः प्रकाराः ॥ ६९ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति अन्य साधनों से बहुत प्रकार से श्रेष्ठ है ।

सूत्रः- अतो कर्म ज्ञान भक्ति योगेभ्योऽपि प्रपत्तिरेव सर्व श्रेष्ठा सर्वे वदन्ति ॥ ७० ॥

सूत्रार्थ- सभी शास्त्र-पुराण-इतिहास और सन्तजन प्रपत्ति को सर्वश्रेष्ठ भतलाते हैं ।

सूत्रः- नार्धक्षरामपि पृथक् भूता भवति ॥ ७१ ॥

सूत्रार्थ- श्री ७ भगवान से अर्ध क्षण के लिये भी अर्धक नहीं होती ।

सूत्रः- सीताविशिष्टोरामः प्रपत्त्यर्थाय ॥ ७२ ॥

सूत्रार्थ- सीता शक्ति से सम्प्राप्त श्रीराम ७ प्रपत्ति-पथ के सिद्धि के लिये ही हैं ।

सूत्रः- अर्थावतारे प्रपत्तिः स्वीकार्या ॥ ७३ ॥

सूत्रार्थ- सदाचार्यो, श्रुतियों और शास्त्रों से अर्थावतार में प्रपत्ति करना स्वीकार है ।

सूत्रः- तस्मिन् पूर्णात् पूर्णाः कल्याणगुणगणाः ॥ ७४ ॥

सूत्रार्थ- ज्योति अर्था भगवान में सम्पूर्णा दिव्य कल्याण गुणगण विद्यमान है ।

सूत्रः- सौलभ्येन श्रेष्ठः ॥ ७५ ॥

सूत्रार्थ- सर्व सौलभ्य गुण के द्वारा तो पर, व्यूहादि से भी श्रेष्ठ है ।

सूत्रः- भक्त पारतन्त्र्यमपि ॥ ७६ ॥

सूत्रार्थ- भक्ताधीन सतत रहने के कारण भी सर्वश्रेष्ठ है ।

सूत्रः- क्षमया पृथ्वी समः ॥ ७७ ॥

सूत्रार्थ- अर्था भगवान क्षमा में पृथ्वी के सदृश हैं अतः सर्वश्रेष्ठ हैं ।

सूत्रः- (तस्मिन्)अक्रोधः ॥ ७८ ॥

सूत्रार्थ- अर्थावतार में स्थायी अक्रोध का दर्शन होता है ।

सूत्र:- नाशक्तिः ॥ ७९ ॥

सूत्रार्थ- अर्था भगवान् अशक्तिक अर्थात् शक्तिहीन नहीं हैं ।

सूत्र:- अेवं सर्वेगुणाः आश्रयन्ति ॥ ८० ॥

सूत्रार्थ- इस प्रकार सभी दिव्य कल्याण गुण अर्था विग्रह का आश्रय लिये हैं ।

सूत्र:- स अज्ञ तज्ञाभ्यां शारण्यः ॥ ८१ ॥

सूत्रार्थ- अर्था भगवान् ज्ञानी-अज्ञानी दोनों के सर्वभावेन रक्षक हैं ।

सूत्र:- स्वयं व्यक्त-दैव-सैद्ध-मानुषाः प्रकाराः ॥ ८२ ॥

सूत्रार्थ- अर्था विग्रह स्वयं व्यक्त-दैव, सैद्ध और मानुष भेद से चार प्रकार के होते हैं ।

सूत्र:- ब्रह्म प्राप्तेर्जिज्ञासा ॥ ८३ ॥

सूत्रार्थ- प्रथम तो अधिकारी के लृद्य में ब्रह्म-प्राप्ति की इच्छा होनी चाहिये ।

सूत्र:- सदाचार्य वरणम् ॥ ८४ ॥

सूत्रार्थ- ब्रह्म जिज्ञासा के पश्चात् सदुक्त वरण करना चाहिये ।

सूत्र:- गुरुणा पञ्च संस्कारैः संस्कृतः ॥ ८५ ॥

सूत्रार्थ- सदाचार्य के द्वारा पञ्च संस्कारों से संस्कृत होने का विधान है ।

सूत्र:- ऊर्ध्वपुण्ड्र धराः सर्वे प्रपत्तिपथानुगामिनः ॥ ८६ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत सभी चेतन ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण कर प्रथम संस्कार से संस्कृत होते हैं ।

सूत्र:- तुलसिका दाम कण्ठः ॥ ८७ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत वैष्णव का कण्ठ में तुलसी की माला धारण करने वाला दूसरा संस्कार होता है ।

सूत्र:- धनुर्बाणाङ्गिताश्च बाहुमूले ॥ ८८ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति कर्ता वैष्णव के धनुर्बाणाङ्गिता रामायुध से बाहुमूल को अङ्कित करना तीसरा संस्कार होता है ।

सूत्र:- रडस्य त्रयोपदेशः ॥ ८९ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत वैष्णव को रडस्य त्रय मन्त्रों का उपदेश आचार्य से प्राप्त करना चतुर्थ संस्कार होता है ।

सूत्र:- मन्त्रे उस्तगते तद्देवो उस्तगतः ॥ ९० ॥

सूत्रार्थ- रडस्यत्रय मन्त्र के उस्तगत होने पर मन्त्र के देवता उस्तगत हो जाते हैं ।

सूत्र:- भगवन्नाम पूर्वक दासान्त नामधेयम् ॥ ९१ ॥

सूत्रार्थ- सदाचार्य शरणागत वैष्णव को भगवन्नाम पूर्वक दासान्त नाम देते हैं ।

सूत्र:- रडस्य त्रयार्थस्योपदेशः ॥ ९२ ॥

सूत्रार्थ- पुनः सदाचार्य शिष्य की जिज्ञासा व योग्यता देखकर, अधिकारी शिष्य को रहस्यत्रय के अर्थ का उपदेश करते हैं ।

सूत्र- ब्रह्म सम्बन्धेन शिष्यान् बन्धयति ॥ ८३ ॥

सूत्रार्थ- सद्गुरु शिष्य की प्रीति-प्रतीति की परीक्षा कर, रसानुभूति के लिये उसको ब्रह्म-सम्बन्ध से सम्बन्धित करते हैं ।

सूत्र- प्रभु प्रपत्तिं कृत्वा शिष्यगुणान् वर्धयति ॥ ८४ ॥

सूत्रार्थ- कृपामूर्ति आचार्य ईश्वर की शरणागति (प्रार्थना)कर करके शिष्य के सद्गुणों का वर्धन करते हैं ।

सूत्र- सर्व समर्थोऽपि आङ्घ्रियन्त्वं धारयति ॥ ८५ ॥

सूत्रार्थ- सदाचार्य सर्व समर्थ होते लुभे भी, अपने को सदा आङ्घ्रियन्त्वं के आसन पर आसीन कराये रहते हैं ।

सूत्र- न छानिः न न्यूनः ॥ ८६ ॥

सूत्रार्थ- आचार्याभिमान से न कोछ छानि है और न अन्योपायो से वल कम छी है ।

सूत्र- पूर्ण परब्रह्मवत् आचार्य स्वरूपः ॥ ८७ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य का स्वरूप पूर्ण परब्रह्म के स्वरूप से भिन्न नहीं है ।

सूत्र- ईश्वरः कर्मफलप्रदानायोन्मुष्णः आचार्यः मोक्षप्रदातुमुन्मुष्णः ॥ ८८ ॥

सूत्रार्थ- ईश्वर ज़ुवों के कर्मनुसार फल देने वाले हैं किन्तु आचार्य सभी ज़ुवों को मोक्ष मार्ग में चलाने वाले हैं ।

सूत्र- ईश्वरादज्ञानस्याप्युत्पत्तिः न तु आचार्यात् ॥ ८९ ॥

सूत्रार्थ- ईश्वर से अज्ञान की भी उत्पत्ति होती है किन्तु आचार्य से नहीं, वे मात्र ज्ञान-किरणों को छी बिभेरते हैं ।

सूत्र- आचार्य तृषार्तानां उस्तगतं जलमिव नं तु ईश्वर ॥ १०० ॥

सूत्रार्थ- प्यासे के लिये आचार्य उस्तगत स्वर्ण कलशी के मधुर जल के समान है किन्तु ईश्वर नहीं ।

सूत्र- मुमुक्षूणामाचार्यम्परित्य मात्र भगवदाश्रयोऽपि उस्तगतञ्जलं त्यक्त्वा वरए जलेच्छावत् ॥ १०१ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य को छोड़कर मात्र भगवदाश्रय भी मुमुक्षुओं के लिये उस्तगत जल को छोड़कर प्यास बुजाने के लिये प्रकृति पार विरज्जु के जल की इच्छा करना है ।

सूत्र- दृष्वस्तुराचार्यः तस्माददृष्ट वस्तुरीश्वरः ॥ १०२ ॥

सूत्रार्थ- इसलिये छि आचार्य दृष्ट पथ की वस्तु है और ईश्वर अदृष्ट है ।

सूत्र- स्वर्णं य स्वर्णालङ्कार मिव ॥ १०३ ॥

सूत्रार्थ- स्वर्ण और स्वर्णालङ्कार की भाँति आचार्य और ईश्वर को शरणागत येतन जनता है ।

सूत्र- यो आचार्यवान्नास्ति स ईश्वराप्रियः ॥ १०४ ॥

सूत्रार्थ- जो आचार्यवान नही है, वल ईश्वर को प्रिय नहीं लगता ।

सूत्र- वारि विडीनं कमलं रविर्न पोषयति तेजेन शोषयति ॥ १०५ ॥

सूत्रार्थ- जल बिडीन कमल को सूर्य पोषण नहीं करते वलटे जला डालते हैं ।

सूत्र- अतः आचार्य वरुणं परमेश्वराभिमतम् ॥ १०६ ॥

सूत्रार्थ- अतः आचार्य वरुण करना, परमेश्वर को अभिमत है ।

सूत्र- न दोष-स्पर्शः ॥ १०७ ॥

सूत्रार्थ- आचार्याभिमानि को, भगवान को रक्षक न मानने का दोष-स्पर्श नहीं करता ।

सूत्र- आचार्याभिमानम्वश्यमेव कार्यम् ॥ १०८ ॥

सूत्रार्थ- आचार्याभिमान रूप पञ्चभोपाय अवश्यमेव ग्राहणीय है ।

सूत्र- आचार्याभिमानिनां गुरुरेव गतिः ॥ १०९ ॥

सूत्रार्थ- आचार्याभिमानि की परमगति सद्गुरु ही होते हैं ।

सूत्र- भगवत् कैङ्कर्यमपि आचार्य मुष्पोल्लासार्थम् ॥ ११० ॥

सूत्रार्थ- आचार्य-परायण वैषण्य का भगवत्-कैङ्कर्य भी आचार्य की प्रसन्नता के लिये होता है ।

सूत्र- आचार्याभिमानिनं सर्वभावेन भगवद्-प्रसादस्य प्राप्तिर्भवति ॥ १११ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य-परायण प्रपत्ता को सर्वभावेन भगवान की पूर्णकृपा प्रसाद की प्राप्ति होती है ।

सूत्र- सर्व-प्रियोभवति ॥ ११२ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य को सर्वस्व समझने वाला वैष्णव, सबका प्रिय बन जाता है ।

सूत्र- ऐकैव धर्माचारः परस्परं परमा प्रीतिः ॥ ११३ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य को सर्वस्व मानने वाले तथा भगवान को मानने वाले दोनों भक्तों में परस्पर प्रीति और दोनों की धर्मचर्या ऐक ही होती है ।

सूत्र- भगवतः सौन्दर्यादिकाय सम्पत्तयः कल्याण गुणगुणान्नावरोधयन्ति ॥ ११४ ॥

सूत्रार्थ- भगवान के सौन्दर्यादि देह-वैभव और दिव्य गुणगुण आचार्याभिमान में अवरोध करते हैं ।

सूत्र- आचार्य-देह वैभवः मनुष्यवत् गुणाः ईश्वरवत् ॥ ११५ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य देह का वैभव मनुष्य की तरह तथा दिव्य गुण-गुण ईश्वर की भाँति होते हैं ।

सूत्र- सुलभो भगवदनुरक्तिर्नाचार्यस्य ॥ ११६ ॥

सूत्रार्थ- भगवान की आनुरक्ति सुलभ है किन्तु आचार्य की कठिन है ।

सूत्र- भगवद्गुण स्मरणेन भव प्रीतिर्विनश्यति ॥ ११७ ॥

सूत्रार्थ- भगवान के गुणों का स्मरण करने से, संसार की आसक्ति छूट जाती है ।

सूत्रः- ईश्वरं त्यक्त्वा आचार्यं प्रीतिर्दुर्लभा ॥ ११८ ॥

सूत्रार्थः- ईश्वर की प्रीति को छोड़कर, आचार्य की प्रीति होना दुर्लभ है ।

सूत्रः- भगवदनुग्रहेण साध्यमस्ति ॥ ११९ ॥

सूत्रार्थः- हाँ ! भगवत् कृपा से आचार्य प्रीति ससुलभ हो सकती है ।

सूत्रः- सदगुरु प्राप्तिरपि दुर्लभा ॥ १२० ॥

सूत्रार्थः- प्रीति की भात कौन कहे, सद्गुरु की प्राप्ति भी दुर्लभ है ।

सूत्रः- भगवदनुकम्पयाचार्यं लाभः ॥ १२१ ॥

सूत्रार्थः- भगवत्-कृपा-प्रसाद से ही आचार्य का लाभ होना कडा गया है ।

सूत्रः- शतपुत्रं समः शिष्यः ॥ १२२ ॥

सूत्रार्थः- सखिष्य, सद्गुरु को शत पुत्रों के समान प्रिय होता है ।

सूत्रः- आचार्यस्योपकारं स्मृत्वा शिष्यः प्रत्युपकारं कर्तुमसमर्थः ॥ १२३ ॥

सूत्रार्थः- आचार्य श्री के किये हुये उपकार को स्मरण करके प्रत्युपकार करने के लिये शिष्य सर्वथा असमर्थ होता है ।

।

सूत्रः- शिष्योपि सेवया सद्गुरुं तोषयति ॥ १२४ ॥

सूत्रार्थः- सखिष्य भी अपने समर्पण व सेवा से सद्गुरु को प्रसन्न रणता है ।

सूत्रः- अहं शून्यः गुरोरङ्गं स्वकं स्मरति ॥ १२५ ॥

सूत्रार्थः- अहं रक्षित शिष्य अपने को आचार्य का अङ्ग जानता है ।

सूत्रः- अहम्भवाभावादेवं गुरुचर्या प्रभावात् गुरु रूपो भवति ॥ १२६ ॥

सूत्रार्थः- अहं और मम के अभाव अहं गुरु-सेवा के प्रभाव से शिष्य गुरु रूप हो जाता है ।

सूत्रः- तस्मादाचार्याप्यारः कदापि न करणीयम् ॥ १२७ ॥

सूत्रार्थः- मछोपकारक आचार्य का परिभव कभी नहीं करना चाहिये ।

सूत्रः- शरणागतं प्रपन्नं द्वयोः सर्वप्राप्तिर्भवति ॥ १२८ ॥

सूत्रार्थः- शरणागत प्रपन्न को गुरुदेव और ईश्वर का सर्वस्व प्राप्त हो जाता है ।

सूत्रः- स निश्चिन्त्यतो भवति ॥ १२९ ॥

सूत्रार्थः- प्रपन्न वैष्णव प्रपत्ति के प्रभाव से निश्चिन्त हो जाता है ।

सूत्रः- द्वन्द्वातीतो भवति ॥ १३० ॥

सूत्रार्थः- प्रपन्न द्वन्द्वातीत हो जाता है ।

सूत्रः- आत्मारामो भवति ॥ १३१ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत वैष्णव आत्माराम हो जाता है ।

सूत्रः- भगवति प्रेम लक्षणा भक्तिर्प्रजायते ॥ १३२ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति स्वरूप में स्थित होने से प्रपन्न के हृदय में प्रेम लक्षणा भक्ति उत्पन्न हो जाती है ।

सूत्रः- स श्री स्वरूपो भवेज्जनः ॥ १३३ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति स्वरूप में स्थित होकर, प्रपन्न श्रीस्वरूप हो जाता है ।

सूत्रः- स रामाकारो भवेत् ॥ १३४ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ता, प्रपत्ति स्वरूप में स्थित होकर रामाकार हो जाता है ।

सूत्रः- आयान्ति सर्वे भागवद्धर्माः तस्यहृदयाकाशे ॥ १३५ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत वैष्णव के हृदयाकाश में सम्पूर्ण भागवत-धर्म आकर अपना निवास बना लेते हैं ।

सूत्रः- सर्व वत्वा प्रपन्नाय ईश्वरोऽपि परमः प्रसन्न ॥ १३६ ॥

सूत्रार्थ- प्रपन्न को भगवान भी अपना सर्वस्व देकर ही परम प्रसन्न होते हैं ।

सूत्रः- लोकेऽपि सुभं दत्वा सुभी भवति ॥ १३७ ॥

सूत्रार्थ- प्रपन्न भक्त को लोक की सुभ-सामग्रियाँ देकर सुभी होते हैं ।

सूत्रः- प्रपत्ति कर्तृणां दोषं स्वदोषं गणयति ॥ १३८ ॥

सूत्रार्थ- शरणागति करने वालों के किये हुए दोष को भगवान अपना समझते हैं ।

सूत्रः- भगवत् प्रसादात् कैङ्कर्यं प्राप्तिर्भवति ॥ १३९ ॥

सूत्रार्थ- भगवान के कृपा प्रसाद से ही भगवत् कैङ्कर्य की प्राप्ति होती है ।

सूत्रः- स्वाङ्गमपि ददातीश्वरः ॥ १४० ॥

सूत्रार्थ- शरणागत वत्सल भगवान, शरणागत को अपनी गोद में बैठा कर प्यार करते हैं ।

सूत्रः- सेवया ईश्वरस्य विकसित मुष्णाम्भोजैव शरणागतस्य परं भोगः ॥ १४१ ॥

सूत्रार्थ- अपनी सेवा से प्रभु-विकसित मुष्णाम्भोज ही शरणागत दास का परमभोग्य है ।

सूत्रः- भगवच्चरणाविनैवाश्रयः ॥ १४२ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत चेतन के परमाश्रय श्री भगवान के युगल चरणाविन्द ही हैं, अन्य नहीं ।

सूत्रः- उस्तकमलमभयं ददातीश्वरस्य ॥ १४३ ॥

सूत्रार्थ- ईश्वर का उस्तकमल शरणागत के लिये अभयकारी होता है ।

सूत्रः- देहात्म चिन्ता प्रपत्तिं नाशयति ॥ १४४ ॥

सूत्रार्थ- समर्पित शरणागत चेतन की, की कुछ देह व आत्मा की चिन्ता प्रपत्ति को नष्ट कर देती है ।

सूत्रः- अभिमानोऽपि प्रपत्तिं नाशयति ॥ १४५ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत का किया हुआ किसी प्रकार का अभिमान प्रपत्ति स्वरूप को भ्रष्ट कर देता है ।

सूत्रः- देहाभिमानः ॥ १४६ ॥

सूत्रार्थ- देह में आत्म-बुद्धि होना देहाभिमान कडलाता है ।

सूत्रः- स्वरूपाभिमानः ॥ १४७ ॥

सूत्रार्थ- परमात्मा के स्वरूप के भीतर अपना स्वरूप न देखना स्वरूपाभिमान कडलाता है ।

सूत्रः- उपायाभिमानः ॥ १४८ ॥

सूत्रार्थ- भगवत्-कृपा को उपाय न मानकर, अन्य उपायों का आलम्बन उपायाभिमान कडलाता है ।

सूत्रः- उपेयाभिमानः ॥ १४९ ॥

सूत्रार्थ- उपेयाभिमान भगवत्-कैङ्कर्य-परायण शरणागत येतन मे नहीं होना चाडिये ।

सूत्रः- कर्तृत्वाभिमानः ॥ १५० ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति परायण येतन में कर्तापन का अभिमान नहीं होना चाडिये ।

सूत्रः- ज्ञातृत्वाभिमानः ॥ १५१ ॥

सूत्रार्थ- ज्ञातापन का अभिमान भी प्रपन्न में नहीं रहना चाडिये ।

सूत्रः- भोक्तृत्वाभिमानः ॥ १५२ ॥

सूत्रार्थ- भोक्तापन के अभिमान को भी त्यागना चाडिये ।

सूत्रः- अकृतकराणं वर्जनीयम् ॥ १५३ ॥

सूत्रार्थ- प्रपन्न को अविहित कर्म त्यागने योग्य हैं ।

सूत्रः- भगवदपचारः न करणीयः ॥ १५४ ॥

सूत्रार्थ- भगवदाश्रय ग्रहण करने वाले को भगवदपचार भूलकर भी नहीं करनी चाडिये ।

सूत्रः- भागवतापचारोऽपि न कर्तव्यः ॥ १५५ ॥

सूत्रार्थ- भगवदाश्रयी को भगवान के अङ्गभूत भक्तों का अपचार कभी भी नहीं करना चाडिये ।

सूत्रः- असख्यापचारोऽतिक्रूरः ॥ १५६ ॥

सूत्रार्थ- असख्यापचार तो अति क्रूर होता है, अतः इससे बचना चाडिये ।

सूत्रः- अन्याश्रय निषेधः ॥ १५७ ॥

सूत्रार्थ- भगवदाश्रय के अतिरिक्त अन्य का आश्रय नहीं करना चाडिये ।

सूत्रः- समर्पण-विरोधि-कार्यं न करणीयम् ॥ १५८ ॥

सूत्रार्थ- समर्पण-विरोधी आग्रहात् भूलकर भी नहीं करना चाहिये ।

सूत्र- साधन विरोधी न भवि ॥ १५८ ॥

सूत्रार्थ- सिद्ध साधन शरणागति के विरोधी कार्य को कदापि न करे ।

सूत्र- अन्यदेवात्मन्मनं त्याज्यम् ॥ १६० ॥

सूत्रार्थ- अन्य देवात्मन्मन भी त्याज्य है ।

सूत्र- प्राप्य विरोधी सर्वथैव त्याज्यः ॥ १६१ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति के द्वारा परम प्राप्य के विरोधी वर्ग को सर्वथा त्याग देना चाहिये ।

सूत्र- शेष भूतोऽस्म्यहं तव (भगवतः) ॥ १६२ ॥

सूत्रार्थ- हे पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम यह दास आपका शेष है ।

सूत्र- अभाषोऽग्रहात् ॥ १६३ ॥

सूत्रार्थ- अभाष शरणागति मन्त्रों के उग्रहारा से प्रपत्ति स्वरूप की सिद्धि होती है ।

सूत्र- भगवद् भोग्योऽस्मि ॥ १६४ ॥

सूत्रार्थ- यह दास, परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामजी का भोग्य है, अन्य का व अपना नहीं ।

सूत्र- रक्ष्योऽस्मि भगवतः ॥ १६५ ॥

सूत्रार्थ- हे प्रभो ! यह दास आपकी रक्ष्य वस्तु है ।

सूत्र- रउस्य त्रयार्थमनुसन्धेयम् ॥ १६६ ॥

सूत्रार्थ- रउस्यत्रय के अर्थ का अनुसन्धान करना आवश्यक है ।

सूत्र- मन्त्रापचारो निषेधः ॥ १६७ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य प्रदत्त मन्त्र का अपचार कभी नहीं करना चाहिये ।

सूत्र- देव परिभवमपि ॥ १६८ ॥

सूत्रार्थ- मन्त्र के देवता का परिभव भी नहीं करना चाहिये ।

सूत्र- तदर्थाय प्रार्थनीयः सदा हरिः ॥ १६९ ॥

सूत्रार्थ- रउस्य त्रयार्थ में स्थिति होने एवं मन्त्र और देव में अपचार न होने के लिये प्रभु से सदा प्रार्थना करनी चाहिये ।

सूत्र- सत्सङ्गोऽपि सेवनीयः शरणागतेन ॥ १७० ॥

सूत्रार्थ- प्रभु-प्रेमी भागवतों का सङ्ग, सतत सेवन करने योग्य है प्रपत्ता को ।

सूत्र- तदविषयक ग्रन्थोऽपि पठनीयः ॥ १७१ ॥

सूत्रार्थ- प्रेमाभक्ति एवं प्रपत्ति विवर्धक ग्रन्थों का पठन-पाठन करना चाहिये ।

सूत्रः- आत्मा-वेषाणं करणीयं मुहुर्मुहुः ॥ १७२ ॥

सूत्रार्थ- प्रपन्न को अपनी आत्मा का अन्वेषण बार बार करना चाहिये ।

सूत्रः- स्व-प्रिय-नाम कीर्तन-व्रतः ॥ १७३ ॥

सूत्रार्थ- आत्मप्रिय श्री रामजी के नाम सङ्कीर्तन का व्रत लेना चाहिये ।

सूत्रः- नाम-रूप-लीलाधामष्वनुरक्तिः ॥ १७४ ॥

सूत्रार्थ- भगवान के नाम-रूप-लीला और धाम में प्रपन्न की अनुरक्ति डोनी चाहिये ।

सूत्रः- श्रीहरि-गुरु-हरि भक्तानां कैङ्कर्यमपि ॥ १७५ ॥

सूत्रार्थ- श्रीहरि-गुरु और हरि-भक्तों की सेवा सदा करनी चाहिये ।

सूत्रः- उरेर्मङ्गलानुशासनं स्वरूपानुकूलम् ॥ १७६ ॥

सूत्रार्थ- हरि भगवान का मङ्गलानुशासन करना शरणागत प्रपन्न चेतन के स्वरूपानुकूल है ।

सूत्रः- भव ब्रह्ममयं द्रष्टुमभ्यासः ॥ १७७ ॥

सूत्रार्थ- प्रपन्न, संसार को ब्रह्ममय देखने के लिये तदनुसार अभ्यास करे ।

सूत्रः- दैवी सम्पत्तिर्ग्राह्या मुमुक्षुभिः ॥ १७८ ॥

सूत्रार्थ- मोक्ष कामियों के लिये दैवी सम्पत्ति ग्राह्य है ।

सूत्रः- नैथ्यानुसन्धानं कुर्यात् ॥ १७९ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत को नैथ्यानुसन्धान करते रहना चाहिये ।

सूत्रः- स्वप्रपत्तिमपराध कोटेर्मत्वा क्षमापनमपि ॥ १८० ॥

सूत्रार्थ- अपनी की दुष्ट प्रभु की शरणागति को भी प्रभु का अपराध ही किया है, समझकर क्षमा करने की प्रार्थना करना भी नैथ्यानुसन्धान का अेक अङ्ग है ।

सूत्रः- स्वापराध कारिषु क्षमा-कृपा-कृतज्ञता उपकाराणि करणीयानि ॥ १८१ ॥

सूत्रार्थ- अपना अपराध करने वालों के प्रति क्षमा-कृपा-कृतज्ञता और उपकार करना चाहिये ।

सूत्रः- “सर्वे भवन्तु सुप्तिनः” अभिलाषयति ॥ १८२ ॥

सूत्रार्थ- प्रपन्न सबको सुप्त स्वरूप देखने की अभिलाषा करता है ।

सूत्रः- स सर्वं प्रणमति ॥ १८३ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति करने वाला चेतन सम्पूर्ण जड-चेतनात्मक जगत को प्रणाम करता है ।

सूत्रः- अतोनाभ्यसूयेतकमपि ॥ १८४ ॥

सूत्रार्थ- इसलिये प्रभु-समर्पित चेतन को किसी की असूया नहीं करनी चाहिये ।

सूत्रः- स सर्वलितैक रतः ॥ १८५ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत येतन सर्वलित करने के स्वभाव से संयुक्त होता है ।

सूत्रः- सर्वत्र समदर्शनः ॥ १८६ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत येतन सर्वत्र सम दृष्टि वाले होते हैं ।

सूत्रः- दिनयथा श्रुति-साधु-सदाचार्यैर्नुमोदिता ॥ १८७ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत की दिनयथा श्रुति-शास्त्र-सन्त और सदाचार्य से अनुमोदित होती है ।

सूत्रः- शिष्यात्म रक्षास्य सदाचार्यः सदा चिन्तयेत् ॥ १८८ ॥

सूत्रार्थ- शिष्य की आत्मा के रक्षा का चिन्तन सदाचार्य सदा करता रहे ।

सूत्रः- स्वरूपं लानि दत्तापहार दोषश्च ॥ १८९ ॥

सूत्रार्थ- अपने ही आत्म-रक्षक बनने से स्वरूप की लानि और दत्तापहार दोष प्राप्त होता है ।

सूत्रः- शिष्योऽपि आचार्यं देहानुरक्तिं तस्य शरीर रक्षात्पुण्यं चिन्तयेत् ॥ १९० ॥

सूत्रार्थ- सद्शिष्य को भी आचार्य-देह में परमा प्रीति एवं उनके देह की रक्षा का चिन्तन करना चाहिये ।

सूत्रः- आचार्यं स्वरूपो विनश्यति ॥ १९१ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य का स्वरूप नष्ट हो जाता है ।

सूत्रः- आचार्यः स्ववस्तुमादाय एवं शिष्यः आचार्यं वस्तु मादाय देह यात्रां कुर्यात् ॥ १९२ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य का शरीर-निर्वाह आपनी वस्तु से और शिष्य-देह- प्रयोजन आचार्य वस्तु से होना चाहिये ।

सूत्रः- अन्यथा आचार्यः अपूर्णः एवं शिष्यः यौरो भविष्यति ॥ १९३ ॥

सूत्रार्थ- उपर्युक्त वार्ता के विपरीत आचरण से आचार्य का स्वरूप अपूर्ण और शिष्य का स्वरूप यौरो हो जायगा ।

सूत्रः- अतो शिष्य स्वरूपो शरीरवत् धर्मवत् एवं भार्यावत् प्रयुक्तः ॥ १९४ ॥

सूत्रार्थ- अतः शिष्य का स्वरूप आचार्य के प्रति शरीर के समान, धर्म के समान और भार्या के समान मनीषियों द्वारा कड़ा गया है ।

सूत्रः- एवं आचार्यं स्वरूपोऽपि शरीरीवत्, धर्मावत्, पतिवत् प्रयुक्तः ॥ १९५ ॥

सूत्रार्थ- इसी प्रकार अपने प्रति सम्बन्धी शिष्य के प्रति आचार्य का स्वरूप शरीरी, धर्मा और सत्पति के सदृश कड़ा गया है ।

सूत्रः- अेकैकं स्वार्थेन न वरणीयम् ॥ १९६ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य और शिष्य अेक दूसरे को भौतिक-स्वार्थ के लिये न वरण करें ।

सूत्रः- शिष्यः आचार्यं सेवनं अमाया अलं विहीनेन् कुर्यात् ॥ १९७ ॥

सूत्रार्थ- शिष्य, आचार्य का सेवन अहं-विहीन छल छोड़कर करे ।

आचार्योऽपि वात्सल्येन शिष्यमुत्राद्यधिकं कृपया पालनं कुर्यात् ॥ १८८ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य भी वात्सल्यादि गुणों को पुरस्सर करके अपनी अहैतुकी कृपा द्वारा स्वपुत्र से अधिक मानकर पालन करे ।

सूत्र- शिष्येन् गुरु गौरवम्प्रकटं भवति ॥ १८९ ॥

सूत्रार्थ- श्री सद्गुरु देव का गौरव, शिष्यों के द्वारा सुरक्षित एवं प्रकाशित रहता है ।

सूत्र- आचार्य कृपया शिष्यस्य स्वरूपस्थितिर्भवति ॥ २०० ॥

सूत्रार्थ- आचार्य-कृपा से शिष्य की स्वरूप स्थिति बन पाती है ।

सूत्र- अवं परस्परं हित-प्रयं कुर्यात् ॥ २०१ ॥

सूत्रार्थ- आचार्य और शिष्य परस्पर अेक-दूसरे के हित और प्रिय करने की चेष्टा से युक्त होते हैं ।

सूत्र- लता वृद्ध्यर्थाय शाभामिव ॥ २०२ ॥

सूत्रार्थ- लता की परिवृद्धि के लिये जैसे कोई शाभा सहायिका सिद्ध होती है, उसी प्रकार आचार्योपदिष्ट वार्ता की वृद्धि के लिये भागवतो की उपयोगिता है ।

सूत्र- साधन समुच्चयः न हेतु भूतः प्रभु प्राप्स्यर्थाय न अकृतकरण समुच्चयः विरोधाय समर्थः ॥ २०३ ॥

सूत्रार्थ- परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान की प्राप्ति के लिये मछान से मछान सर्व साधनों का समुच्चय समर्थ नहीं हो सकता और न सम्पूर्ण अविहित कर्मों का समुच्चय-विरोधक बन सकता ।

सूत्र- अतो भगवत्प्राप्ति हेतुर्भागवत्कृपैव ॥ २०४ ॥

सूत्रार्थ- अतः प्रभु-प्राप्ति के लिये भगवत्कृपा ही कारण है ।

सूत्र- आर्तपूर्णा प्रपत्तिरेव कृपा प्रप्तेः कारणम् ॥ २०५ ॥

सूत्रार्थ- आर्ति पूर्ण प्रपत्ति ही भगवत्-कृपा-प्राप्ति की हेतु-भूता है किन्तु उपाय स्वरूपा नहीं क्योंकि भगवान ही सर्व स्वतन्त्र निरङ्कुश स्वामी हैं ।

सूत्र- भरतस्य प्रपत्तिर्नासिद्धा ॥ २०६ ॥

सूत्रार्थ- श्रीभरत जो की शरणागति असिद्ध नहीं हुई अपितु शीघ्र हृवप्रदा सिद्ध हुई है ।

सूत्र- श्रीरामस्य प्रपत्तिरपि ॥ २०७ ॥

सूत्रार्थ- समुद्र के प्रति की हुई श्रीराम जो की शरणागति भी असिद्ध नहीं हुई ।

सूत्र- अतो प्रपत्तिरेव गरीयसी, प्रपत्तिरेव गरीयसी, परपत्तिरेव गरीयसी ॥ २०८ ॥

सूत्रार्थ- इसलिये त्रिसत्य है कि प्रपत्ति ही श्रेष्ठ है, प्रपत्ति ही श्रेष्ठ है, प्रपत्ति ही श्रेष्ठ है ।

सूत्र- प्रपत्तिकर्तृषु वार्णाश्रम धर्मानुसारेण कार्याकार्य व्यवस्थितिर्भवति न वा ॥ २०९ ॥

सूत्रार्थ- परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान की शरणागति करने वाले प्रपन्न मे वार्णाश्रम धर्म के अनुसार कार्याकार्य व्यवस्थिति होती है या नहीं?

सूत्र- शास्त्र संरक्षणं प्रपत्तेरनुकूल कार्यम् ॥ २१० ॥

सूत्रार्थ- शास्त्र संरक्षण करना प्रपत्ति का स्वतृपानुकूल कार्य है ।

सूत्र- अन्यथा पातित्य भयम् ॥ २११ ॥

सूत्रार्थ- अन्यथा पतन का भय है ।

सूत्र- सर्वोऽथ स्थितेप्राप्तौ वेदाः स्वयमेव तस्थोपरि शासनं न कुर्वन्ति ॥ २१२ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत येतन की सर्वोपरि स्थिति हो जाने पर, वेद स्वयं उसके ऊपर से अपना शासन उठा लेते हैं ।

सूत्र- सञ्चित क्रियमाणानि कर्म कृत्वानि स्वयमेव विनश्यन्ति ॥ २१३ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत येतनों के किये हुए सञ्चित और क्रियमाण कर्मों के फलकर्ता को न प्राप्त होकर स्वयं विनष्ट हो जाते हैं ।

सूत्र- गुरुणा बोधनीयः मुहुर्मुहुः ॥ २१४ ॥

सूत्रार्थ- प्रपत्ति-पथ-वियलित साधक, सद्गुरु द्वारा बार-बार बोध कराने योग्य है ।

सूत्र- भागवतापयारोस्यात् ॥ २१५ ॥

सूत्रार्थ- भागवतापयार हो जायगा ।

सूत्र- तस्थुडिताथार्थाय ष्मर प्रपत्तिमेवं मङ्गलानुशासनं कुर्यात् ॥ २१६ ॥

सूत्रार्थ- सद्गुरु को शिष्य-छित-चिन्तन करके प्रभु की शरणागति एवं उसका मङ्गलानुशासन करना चाडिये ।

सूत्र- भरत सदृशं स्वस्वतृपम् ॥ २१७ ॥

सूत्रार्थ- श्रीभरत ञु के समान आत्म स्वतृप होता है ।

सूत्र- रामः परस्वतृपस्य साक्षात् मूर्तिः ॥ २१८ ॥

सूत्रार्थ- श्रीराम ञु मडाराज परस्वतृप की साक्षात् मूर्ति हैं ।

सूत्र- उपायस्य स्वतृपो सीतावत् ॥ २१९ ॥

सूत्रार्थ- उपाय का स्वतृप श्रीजानकी ञु की भाँति जानना चाडिये ।

सूत्र- उपेय-प्रीतिर्वक्ष्माणवत् ॥ २२० ॥

सूत्रार्थ- उपेय-प्रीति श्रीलक्ष्माण ञु के समान होनी चाडिये ।

सूत्र- अतो डैडुर्थ कर्मणि उड्डृष्टापकृष्ट भावना न कुर्यात् कदाचन ॥ २२१ ॥

सूत्रार्थ- अतअेव भगवत् डैडुर्थ में ढौंय-नीय का विचार कभी नहीं करना चाडिये ।

सूत्रः- विरोधी स्वरूपो डैकेयीवत् ॥ २२२ ॥

सूत्रार्थ- विरोधी स्वरूप डैकेयी के सदृश होता है ।

सूत्रः- स्वरूपज्ञ शरणागतस्य सर्व समीचीनं भवति ॥ २२३ ॥

सूत्रार्थ- स्वरूपज्ञ शरणागत येतन का सब कुछ समीचीन होता है ।

सूत्रः- शरणागतस्यासमीचीनं समीचीनं भवति ॥ २२४ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत का असमीचीन भी समीचीन हो जाता है ।

सूत्रः- शरणागत विरोधकस्य दुर्दशा भालिवत् ॥ २२५ ॥

सूत्रार्थ- शरणागत येतन से विरोध करने वाले की दुर्दशा वालि वानर की भाँति होती है ।

सूत्रः- प्रपत्तिं कृत्वा तत् विरोधी कार्य कर्तारः द्विविध वत् ॥ २२६ ॥

सूत्रार्थ- शरणागति करके शरणागत विरोधी कार्य करने वाले की दशा द्विविध वत् होती है ।

सूत्रः- शरणागति समर्थकस्य गतिर्लनुमानवत् ॥ २२७ ॥

सूत्रार्थ- शरणागति सिद्ध साधन का समर्थन करने वाले की गति श्री लनुमान ज़ु जैसी होती है ।

॥ श्रीसीतारामार्पणमस्तु ॥

Encoded and proofread by Mrityunjay Rajkumar Pandey

Prapatti Darshana Sutrani

pdf was typeset on June 20, 2024

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

